E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक पक्ष का मानव जीवन पर प्रभाव

शोध–प्रपत्र

डॉ. विजय कुमार शर्मा
प्रो. हिन्दी विभाग
एस.एल.पी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
मुरार ग्वालियर (म.प्र.)

चन्द्रप्रभा तिवारी
शोध छात्रा हिंदी
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date
05/02/2026
Paper Publishing Date
10/02/2026
DOI
https://doi.org/10.5281/zenodo.18900217

सामाजिक स्तर के निर्धारण में वंश–परम्परा, जाति, लिंग, वैयक्तिक प्रतिभा आदि तत्वों का भी योगदान होता है। किन्तु आधुनिक भौतिकवादी युग में अर्थ का महत्व सर्वोपरि हो गया है। एक सीमा तक व्यक्ति की आर्थिक परिस्थिति ही उसके सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को भी संचालित करती है। अतः समाज के सम्यक् अध्ययन के लिए आर्थिक विषमता पर आधारित सामाजिक वर्गों का अध्ययन उपयुक्त होगा।

ज्ञान चतुर्वेदी ने अपनी विभिन्न रचनाओं में राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक पक्ष को व्यक्त किया है। उनकी सभी रचनाओं में राजनीति में होने वाले बदलाव को बड़ी बारिकी से मूल्यांकन कर समाज के समस्त उनको दर्शाया है।

नेतागिरी कहें या राजनीति ने इस देश में पिछले 20 वर्षों में कल्पनातीत रूप से पतित–घिनौनी सूरत अख्तियार की है, खासतौर से तथाकथित बेलगाम अर्थव्यवस्था और वैश्वीकरण की नीति के बाद। सबसे बुरी हुई जाति आधारित खूनी नेतागिरी और घिनौने रूप से खतरनाक साम्प्रदायिकता आधारित राजनीति, जिसने सभ्य नागरिक जीवन को ही हिलाकर रख दिया है। यद्यपि इन सबके लिये वोटर भी उतने ही जिम्मेदार हैं। ज्ञान चतुर्वेदी ने स्वाँग नामक उपन्यास में कॉलेज की राजनीति को व्यक्त किया है। वर्तमान के अध्यापक अपने मूल्य से दूर जा चुके है। अध्यापक और छात्रों के बीच में विभिन्न प्रकार के राजनीतिक संगुम्फन को दर्शाया है।

इसी इमारत के सामने, अभी बेतरतीब ढंग से यहाँ–वहाँ, दस–बारह मोटरसाइकिलें खड़ी हुई हैं। ये मास्टर लोगों की गाड़ियाँ हैं। अभी शाम का समय है। कॉलेज खत्म हुए आधा घंटा हो चुका। छात्र लोग घर जा चुके हैं। टीचर भी एक–एक करके निकले जा रहे हैं। कुछ लोग अभी भी स्टाफ रूम में कॉलेज राजनीति चलाते हुए बैठे हैं। वे लोग भी थोड़ी देर में निकल जाएँगे। पंडिज्जी बस, कभी–कभी ही कॉलेज आते हैं। इधर एक कमरा है उनका। आज आए थे। अन्दर बैठे भी रहे। सारे स्टाफ ने कमरे में जाकर पंडिज्जी पालांगी का कर्तव्य भी निभाया। वे अभी निकले ही हैं और निकलते–निकलते बाहर बाउंड्रीवाल के गेट के पास रुक गए हैं। बाउंड्री के साथ की कच्ची जमीन पर एक ट्रैक्टर झाड़ियाँ उखाड़ रहा है।[p] उपन्यासकार ने वर्तमान समय की राजनीति पर व्यंग्य किये, जिनका संबंध शिक्षा विभाग से है। हमारे समाज में शिक्षक समाज का आर्दश माना जाता है, जो राष्ट्र के निर्माण में बहुत

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बड़ी भूमिका निभाता है। आज के युग में बहुत से शिक्षक निराधार हो चुके है, इनके पास किसी भी प्रकार के नैतिक मूल्य नहीं है। बहुत से शिक्षक धनपशु के रूप में जीवन जी रहे है। नीति, नियती और आदर्श भूल चुके है। धन की लालसा के लिए रात-दिन संघर्ष कर रहे है।

इस देश के नेताओं की सबसे बड़ी क्वालिटी है- सठिया जाने के बावजूद, शरीर से अपंग हो जाने, नाक, कान, आँख घिस-पिट जाने के बावजूद न तो कोई सन्यास लेने के लिये तैयार है न उनमें साहस ही है। कोई भी नेता जूलियस नियरेरे जी या नेल्सन मंडेला जी अथवा अभी दलाई जी की तरह सत्ता या पद त्याग का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये तैयार नहीं है। भारत के नेता आज भी पद और कुर्सी के साथ डूबने का उदाहरण प्रस्तुत करने के लिये ही तैयार हैं क्योंकि उन्होंने इतने धंघ-फंघ किये हैं कि एक अज्ञात भय उनका पीछा नहीं छोड़ता है। यही नेता देश के युवाओं, नागरिकों को त्याग, बलिदान का पाठ और बच्चों को देश भक्ति का उपदेश देते हैं।

कविवर नीरज की कविता याद आ जाती है; जिनके पास शब्द हैं जितने, उतना उनसे अर्थ दूर है शब्द झूठे हैं सभी सत्य कथाओं कि तरह भाषण निर्लज्ज हैं सभी, वैश्या कि अदाओं कि तरह उपदेश और व्यवहार में जमीन आसमान का अन्तर। कथनी और करनी के इस भयावह फर्क को देख कर ही देश की डवक ळमद ंदक ळमद छमज भी उतनी ही समझदार बन गई है। भ्रष्टाचार, अनैतिकता और अनुशासनहीनता में वो नेताओं से किसी तरह पीछे नहीं रहना चाहती है; लेकिन आन्दोलन-प्रदर्शन करने में उनसे आगे।

इस हालात में जल्दी ही देश की स्थिति ऐसी होने वाली है कि बच्चे भ्रष्ट ही पैदा होंगे, जैसे आज टीवी-चौनल-सीरियलों की बदौलत जवान ही पैदा हो रहे हैं। अतः वो भ्रष्टता में ही जियेंगे और उसी में अन्त होगा। पाश्चात्य सपमिजलसम, नशा और गोली-चाहे खायें या मारें से जुड़ा होगा। अतः सेक्स अपराध और रेप, विकृत मैथुन और संभोग तथा हर तरह के बाल-नाबालिग, यौन अपराध तथा सम्बन्ध एक संस्कृति का रूप ले लेंगे।

इस युगमें दासों पर बड़ा अत्याचार किया गया। सांस्कृतिक विकास को लक्ष्य करके दासों के उत्पीड़न को भुलाया नहीं जा सकता। इस उत्पीड़न के मूल में मालिकों की कूरता, एकाधिकार की भावना, विलासिता तथा दासों की विवशता ही थी। दासों के उत्पीड़न के मूल्य पर ऐसे सांस्कृतिक विकास को मानवता के नाम पर कलंक ही मानना चाहिए। दासों के सम्मिलित संघर्ष से इस युग का अन्त हुआ।[पप]

दासता प्रथा का स्थान कृषक दासता ने लिया। इसमें किसान की जमीन और किसान पर भी स्थानीय सामन्त का अधिकार समझा जाता था। इन किसानों को सामन्त की जमीन पर बेगार भी करनी पड़ती थी। समाज में सामन्त और किसान, ये दो मूलभूत वर्ग थे। मध्यवर्ग सामन्तवादी व्यवस्था में नहीं पाया जाता, क्योंकि उस समय जमींदार तथा किसान का सीधा संबंध था। सामन्त वर्ग ने जनता के धन का उपयोग सदैव व्यक्तिगत आकांक्षा और भोग-विलास के लिए किया। अपनी स्वार्थ रक्षा के लिए भारत में इसने राष्ट्रीय आंदोलनों का विरोध और ब्रिटिश कुटनीति एवं दमन चक्र का समर्थन किया।

गुप्तरोग को कौन नहीं जानता? अर्थात सभी जानते हैं। देश की हर दीवार पर गुप्तरोगियों का आह्वान करते विज्ञापन लिखे हैं। देश का बच्चा-बच्चा अखबारों, पोस्टरों, दीवारों पर लिखे बड़े-बड़े विज्ञापनों के द्वारा गुप्तरोगों के इलाज के लिए उपलब्ध मुछाड़िए, पहलवान डाक्टरों की तस्वीरों से परिचित हैं। इन विज्ञापनों से लगता है कि यह देश गुप्तरोगियों का देश है।[पपप]

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

उपन्यासकार ने समाज में होने वाले गुप्त रोगों के बारे में बताया है। हमारे देश में शिक्षा एवं जागरूकता की कमी होने के कारण लोग गुप्त रोगों पर चर्चा नहीं करना चाहते है। अधिकतर गुप्त रोग विज्ञापनों के माध्यम से बताये जाते है कि किस प्रकार से नामर्द व्यक्ति को मर्द बनाया जाये, जिससे औरत से नाकाम मर्द सहवास क्रियाकर अपने आपको पुर्ण पुरूष की श्रेणी में रख सकें। हमारे समाज में गुप्त रोग पर चर्चा करना एक सामाजिक प्रतिबंध है और मर्यादा भी है। गुप्त रोगों की दवाईयों को विभिन्न नामों से बेची जाती है, जिससे व्यक्ति अपनी मर्दागनी को सुरक्षित रख सकें।

वर्तमान समाज को प्रायः तीन वर्गो–निम्न वर्ग, मध्य वर्ग तथा उच्च वर्ग में विभाजित किया जाता है। किन्तु आदिम समाज–व्यवस्था के संबंध में विचारकों का मत है कि उस काल में वर्गभेद नहीं था। तत्कालीन समाज आर्थिक दृष्टि से पारस्परिक सहयोग के आधार पर संगठित था। स्थायी जीविका और निवास के अभाव में लोग खानाबदोशों का जीवन व्यतीत करते थे। जीविका का एकमात्र आधार प्रकृति प्रदत्त वस्तुएं थीं। फूल–फल और जानवरों का मांस एकत्र करने में समुदाय का सम्मिलित प्रयास होता था। इसी कारण इन खाद्य सामग्रियों पर किसी का व्यक्तिगत अधिकार नहीं होता था।[पअ]

संक्षेप में कहा जा सकता है कि उस काल के समाज में वर्ग–भेद के भौतिक आधार ही विकसित नहीं हो पाये थे। उत्पादन इतना कम होता था कि मनुष्य को अपने जीवन–यापन के लिए कठिन संघर्षकरना पड़ता था, व्यक्तिगत सम्पति बनाना उसके लिए असंभव बात थी।

विद्वानों का एक बड़ा वर्ग मध्यवर्ग को औद्योगिक क्रांति से सम्बद्ध करके देखता है और यही उपयुक्त भी है। यह विचार असंगत लगता है कि भारतीय मध्य वर्ग का उद्‌भव अंग्रेज और अंग्रेजी शिक्षा के सम्पर्क से हुआ है। अंग्रेजों का भारत आगमन न होता, तब भी भारत में औद्योगिक केंन्द्रों की स्थापना होती। जब संपूर्ण संसार में बड़े–बड़े औद्योगिक कारखाने स्थापित हो रहे थे, तब भारत उसके प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता था। तथापि इतना तो मानना ही पड़ेगा कि इस ऐतिहासिक कार्यका श्रेय अंग्रेज और अंग्रेजी शिक्षा को प्राप्त होता है।

हुमायूँ कबीर का मत है– श्काफी समय तक शासन व्यावसायिक लाभको दृष्टि में रखकर किया जाता रहा। देश के साधनों का पूर्णरूपेण शोषण करने के हेतु ब्रिटेन को मध्य श्रेणी के मनुष्य समुदाय की आवश्यकता थी जो उसके और भारतीय लोगों के बीच मध्यस्थ का कार्य कर सके। शासन प्रबंध की आवश्यकता के संबंध में भी यही समस्या थी। परिणामस्वरूप प्रबंध संबंधी एकबड़े वर्ग का निर्माण हुआ जिसने अंग्रेजों को शासन–प्रबंध और व्यापार में सहायता दी।

ब्रिटिश शासन के परवर्ती काल में जिस मध्यवर्ग का प्रसार हुआ, वह औद्योगिक विकास की उपज न होकर उच्च शिक्षा से प्रभावित वर्ग था। इसी कारण मध्यवर्ग के अधिकांश व्यक्ति बुद्धिजीवी हुए। ड०å कुसुम वार्षीय के शब्दों में ष्उन्नीसवीं सदी के उतरार्द्ध में भारत में पूंजीपति वर्ग के उदय के साथ–ही–साथ नये शिक्षित मध्यवर्ग के अध्यापकों, वकीलों, डाक्टरों, सरकारी कर्मचारियों और क्लर्कों का नवीन वर्ग उत्पन्न हुआ। यह वर्ग अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त था।

समाज के सदस्यों को वर्गों में विभाजित करने के लिए विद्वानों ने अनेक तत्त्वों का उल्लेख किया है। सभी लोगों ने प्रायः आय को प्रमुख स्थान दिया है।[अ] राय लीयूस तथा मांडे द्वारा व्यक्ति के वर्ग–निर्णय के लिए प्रस्तुत सूची में आय का प्रमुख स्थान है। उनके अनुसार, ष्आय, व्यवसाय, स्वराघात, व्यय की आदतें, निवास, संस्कृति,

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अवकाश के कार्य, शिक्षा, कपड़े, नैतिक अभिवृत्ति, अन्य व्यक्तियों से सम्बन्ध और पारिवारिक पृष्ठभूमिष व्यक्ति का वर्ग निश्चित करने वाले आवश्यक तत्व हैं।

डॉ. बीण बीण मिश्र का यह कथन अधिक संगत है कि, ष्मनुष्य की आर्थिक असमानता ही मुख्य रूप से सामाजिक विभेद को प्रभावित करती है। यद्यपि यह पूर्णरूपेण उसका निर्धारण नहीं करती। यह आर्थिक असमानता मूलतः उस संबंध के अंतर से उत्पन्न होती है जो एक व्यक्ति या व्यक्ति–समुदाय का सम्पति अथवा उत्पादन और वितरण के साधनों के साथ होता है। यदि व्यक्ति जमीन का मालिक है तो अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक महत्व प्राप्त करने लगता है। इसके विपरीत यदि वह पराई जमीन पर केवल खेती करने वाला है तो वह स्वयं को सामाजिक दृष्टि से अधोगत पाता है।ष्ष इसी भांति भारतीय परिवेश में जाति–व्यवस्था भी वर्ग–निर्धारण को प्रभावित करती है। निम्न जाति का सदस्य प्रतिभा और धन–सम्पन्न होने पर भी उच्च जाति जैसी सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं प्राप्त कर पाता है। आधुनिक युग में यद्यपि जाति व्यवस्था शिथिल हुई है तथापि उसके प्रभाव को एकदम नकारा नहीं जा सकता।

आय, व्यवसाय, शिक्षा, जाति, वैयक्तिक प्रतिभा, पारिवारिक पृष्ठभूमि आदि में मात्र एक को ही व्यक्ति के वर्गीकरण का आधार नहीं बनाया जा सकता। उदाहरण के लिए एक अशिक्षित निम्नवर्गीय व्यक्ति व्यवसाय में अधिक आय प्राप्त करने से ही मध्यवर्ग का सदस्य नहीं बन जाता। संभव है कि उसके विचारों में परिपक्वता का अभाव हो, घर में गंदगी भी हो सकती है। बात–चीत में निरक्षरता झलकती हो। इसलिए कहा जा सकता है कि कोई भी एक कसौटी अपने में पूर्ण नहीं है। जिसे आधार मानकर व्यक्ति के वर्ग का निर्धारण किया जा सके। सभी कसौटियों के सामूहिक संदर्भ में किया गया वर्गीकरण ही उपयुक्त वर्गीकरण है। यह पृथक बात है कि किसी एक समाज में किसी एक कसौटी को अन्य की अपेक्षा अधिक महत्व प्राप्त होता है।

इस श्लोक के आधार पर कहा जा सकता है कि धर्म एक आचरण संहिता है जो व्यक्ति के सामाजिक एवं वैयक्तिक क्रियाओं को नियंत्रित करता है। ये क्रियाएं व्यक्ति के क्रमिक विकास की दृष्टि से की जाती हैं। इन क्रियाओं को करते हुए व्यक्ति अपने उद्देश्य को प्राप्त कर लेता है। अन्यथा जीवन के सुखों से वंचित रह जाता है। जीवन में धर्म की अनिवार्यता का उल्लेख करते हुए राधाकृष्णन लिखते हैं–

जिन सिद्धांतों का हमें अपने दैनिक जीवन में और सामाजिक संबंधों में पालन करना है, वे उस वस्तु द्वारा नियत किये गये हैं जिसे धर्म कहा जाता है। उन्होंने आगे लिखा है– धर्म की धारणा के अंतर्गत हिन्दू उन सभी अनुष्ठानों और गति विधियों को ले आता है जो मानवीय जीवन को गढ़ती और बनाये रखती हैं। हमारे पृथक–पृथक हित होते हैं, विभिन्न इच्छाएं होती हैं और विरोधी आवश्यकताएं होती हैं जो बढ़ती हैं और बढ़ने की दिशा में ही परिवर्तित भी हो जाती हैं। उन सबकों घेर–घारकर एक समूचे रूप में प्रस्तुत कर देना धर्म का प्रयोजन है।

धर्म का सिद्धांत हमें आध्यात्मिक वास्तविकताओं को मान्यता देने के प्रति सजग करता है। संसार से विरक्त होने के द्वारा नहीं, अपितु इसके जीवन में, इसके व्यवसाय (अर्थ) और इसके आनंदों (काम) में आध्यात्मिक विश्वास की नियंत्रक शक्ति का प्रवेश कराने के द्वारा। जीवन एक है और इसमें पारलौकिक (पवित्र) और ऐहिक (सांसारिक) का कोई भेद नहीं है। सामान्य कृत्य भी उतने ही प्रभावी हैं जितनी मुनियों की साधना।

रचनाकार ने नरक–यात्रा में विभिन्न रोगों का वर्णन किया है। किन्तु गुप्त रोग हमारे समाज का हास्यस्पद विषय है। अधिकतर पुरूष एवं महिलाऐं इस विषय पर चर्चा नहीं करना चाहते है। विज्ञानपन, पुस्तकों, पत्र एवं

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पत्रिकाओं के माध्यम से इनके बारे में जानना चाहते है। उपन्यासकार ने गुप्त रोगों पर कई प्रकार के व्यंग्य किये है, जो समाज के लिए संवेदनाओं से भरे हुये है।

उपर्युक्त उद्धरण की व्याख्या से धर्म का मूल प्रयोजन स्पष्ट हो जायेगा। धर्म यहां पर सांसारिक अन्तर्विरोधों को शमित करने के साथ-साथ निवृत्ति और प्रवृत्ति में समन्वय स्थापित करता है। भौतिक प्रवृत्ति की अतिवादिता को धर्म आध्यात्मिक शक्ति से नियंत्रित करता है। अर्थ-प्राप्ति को ही उद्देश्य बना लेने से जीवन की वास्तविक प्रगति अवरुद्ध हो जाती है। धन जीवन में सांसारिक सुख प्रदान कर सकता है परन्तु आत्मशुद्धि-आत्मा का विकास-तो धर्म-परायण जीवन व्यतीत करने से ही प्राप्त हो सकता है। धन साधन है, साध्य नहीं। कर्म से अर्थ और काम की प्राप्ति होती है। किन्तु धर्म से नियंत्रित कर्म ही व्यक्ति और समाज का कल्याण कर सकता है। धर्म विहीन कर्म स्वार्थयुक्त होने से व्यक्ति और समाज को विनाश की ओर अग्रसर करता है। इसलिए लोक-कल्याण हेतु अति भौतिकवादी प्रवृत्तियों पर आध्यात्मिक नियंत्रण आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. चतुर्वेदी ज्ञान, स्वाँग, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2021, पृ. 74
2. मिश्र अशोक, अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, ज्ञान प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2012, पृ. 15
3. चतुर्वेदी ज्ञान, नरक-यात्रा, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2021, पृ. 80
4. मिश्र अशोक, अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, ज्ञान प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2012, पृ. 12
5. मिश्र अशोक, अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, ज्ञान प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2012, पृ. 14